मेरी डायरी के कुछ पन्ने...

आमोद कारखानिस

ठण्ड का मौसम है। बड़ी सुबह जब सभी रज़ाई में दुबके हैं, हम निकल पड़ते हैं – येऊर जंगल की ओर। साथ है ताज़ी, ऑक्सीजन भरी ठण्डी हवा। जंगल की सीमा तक पहुँचते-पहुँचते सूरज की पहली किरणें पेड़ों के शिखरों को छूने लगी थीं। पेड़-पत्तियों के बीच से कहीं-कहीं धूप के चन्द टुकड़े जमीं तक पहुँच रहे थे। इनके भरोसे खुद को सेंकने का खेल हम अनजाने में ही शुरू कर चुके थे। सब कुछ सुन्दर और शान्त लग रहा था। क्या हम जल्दी आ गए हैं?

जल्दी कहाँ? जंगल तो कब का जाग गया था। कितने ही पंछी सुबह का आलाप छेड़ चुके थे। मैं उस सुन्दर संगीत-सभा में बुलबुल, शूबीगी (आयोरा) जैसे कुछ ही गायकों को पहचान पाया।

आगे बढ़े ही थे कि जायंट वुड स्पाइडर दिखी (1)। सुबह-सुबह जल्दी उठकर अपने घर को झाड़-पोंछकर साफ सुथरा बनाती। क्या विशाल जाल बनाती है वह! कई बार रास्ते के एक तरफ के पेड़ से दूसरी तरफ के पेड़ तक इनका जाल लटका हुआ दिखाई दे जाता है। लगता है रात भर दावत चली है – जाल में ढेर सारी कीड़े, पतंगे अटके होंगे। अब जाल की मरम्मत करना ज़रूरी है। इस मकड़ी की खासियत है कि यह अपने जाल को बहुत साफ रखती है। मेरे दोस्त ने एक छोटी-सी टहनी उसके जाल में फेंकी। जाल के बीच में बैठी मकड़ी कम्पनों को महसूस कर झट से वहाँ आ पहुँची। जब देखा कि धोखा हुआ है तो आसपास का जाला काटकर टहनी को गिरा दिया। फिर जाले की मरम्मत कर दी।

तुम सोच रहे होगे कि मुझे कैसे पता कि वो मादा है नर नहीं। पहचान आसान है। मादा हमेशा नर से बहुत बड़ी होती है। नर मादा से 10-15 गुना छोटा होता है। वो इतना छोटा होता है कि उसे मादा के पास बहुत सम्भलकर जाना पड़ता है। कहीं गलती से वो उसे अपना शिकार ही न समझ बैठे।

उस के बाद हमें एक सिग्नेचर स्पाइडर दिखाई दी। कुछ गड़बड़ लगी। मकड़ी के तो 8 पैर होते हैं, इसके तो सिर्फ चार ही पैर दिख रहे हैं। हैण्डलेंस से थोड़ा बारीकी से देखा (2)।

यह देखो एक और सिग्नेचर स्पाइडर। इसने अपनी चारों लाइनें पूरी कर ली हैं (3)।

आज मकड़ी दिवस है क्या? एक और सिग्नेचर मकड़ी! लेकिन अलग परिवार की (4)।

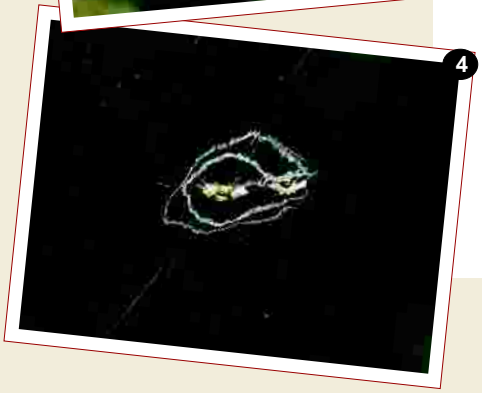

पत्तों, घास पर सभी जगह ओस दिखाई दे रही है। धूप में ओस हीरे जैसी चमक रही है। कमाल है ना। जिस रोशनी ने उन्हें हीरा बनाया वही रोशनी कुछ देर बाद उनके खत्म होने का कारण भी बनेगी।

यह देखो एक छोटे-से पत्ते पर ओस की बूँदों के साथ बुना जाल (5)।

तुमने ध्यान दिया होगा कि हर मकड़ी का जाल बुनने का अलग तरीका होता है। जायंट और सिग्नेचर मकड़ी गोल-गोल धागों के बीच बाहर की ओर जाते सीधे धागे बनाती हैं। पत्ते पर बना छोटा-सा जाला या घर में दीवार के कोनों पर बना जाला अलग किस्म का होता है।

यह देखो एक और नमूना। जनाब पूरा जाल नहीं एक ही धागा बनाते हैं और उससे मज़े से लटककर इधर-उधर जाते हैं। यह गैस्टोकैन्थस मकड़ी है। गैस्टो यानी पेट और कैन्था शब्द काँटों से सम्बन्धित है। इस हिसाब से गैस्टोकैन्थस का मतलब हुआ वो जिसके पेट पर काँटे हैं। यह एक बहुत छोटी मकड़ी होती है। लेकिन कई मकड़ियाँ तो इससे भी छोटी होती हैं। चलो जंगल की सबसे छोटी मकड़ी को तलाशते हैं। मुझे नहीं मालूम कि यही सबसे छोटी मकड़ी है या नहीं। अपनी तमाम कोशिश कर मैंने यह फोटो खींची है। इसका वास्तविक साइज़ लगभग 2 मिलीमीटर है (6)।

सभी मकड़ियाँ पेड़ या घरों में ही जाले नहीं बुनती हैं। कुछ मकड़ियाँ जमीन पर ही अपना जाला बुनती हैं। हमें जगह-जगह पर फनल मकड़ी के जाल दिखाई दिए। सावधानी से जाल के पास जाइए और धीरे से जाल पर दस्तक दीजिए। मकड़ी अपने बिल से बाहर आएगी। यह देखने के लिए कि कोई शिकार आया है या यूँ ही दस्तक हुई (7)।

अगर तुमको लगता है कि इतना महीन धागा बुनना सिर्फ मकड़ियों के बूते की बात है तो यह तुम्हारी गलतफहमी है। कीटों की दुनिया में और भी कई खाँ हैं। इनमें सबसे मशहूर है रेशम का कीड़ा। रेशम को मकड़ी नहीं बुनती। उसे बुनता है एक लार्वा। तुम्हें याद होगा तितली या पतंगे के जीवन की चार अवस्थाएँ होती हैं – अण्डा, लार्वा, प्यूपा और पतंगा। लार्वा अपने शरीर से रेशम का धागा निकालकर अपने आसपास एक कोष बनाता है। रेशम के कपड़े खूबसूरत तो लगते हैं लेकिन इन्हें बनाने का तरीका बहुत क्रूर है। सैंकड़ों प्यूपा को उबलकर मरना पड़ता है तब जाकर रेशम मिलता है।

खोजते-खोजते हमें एक अजूबी चीज़ देखने को मिली। एक पत्ते पर कुछ लार्वा जाल बुन रहे थे। पर वो कोष नहीं बना रहे थे। मेरा अनुमान है कि इनके पीछे छुपकर इत्मिनान से पत्ते खाने के लिए यह खास इन्तज़ाम किया गया है (8)।

हाँ, एक बात और। सभी मकड़ियाँ जाल नहीं बुनती। कुछ छुपकर बैठ जाती हैं और जैसे ही कोई कीट नज़दीक आता है, झपटकर उसे पकड़ लेती हैं। मैं ब्लोपॅरिस ॲस्पेरिना के खूबसूरत फूल की फोटो ले रहा था। तभी मुझे लगा कि फूल के ऊपरी हिस्से पर कोई पीली चीज़ चिपकी हुई है। गौर से देखा तो एक छोटी-सी मकड़ी दिखी। फूल पर पैर मोड़कर चुपचाप बैठी। जैसे ही कोई कीड़ा शहद के लिए आया कि गड़प... (9)।

अब तक दिन काफी हो चुका था। वापस निकलना चाहिए। क्या अनोखी दुनिया है। जितना ढूँढोगे अजूबे पाते जाओगे। फिलहाल यही बस, और फिर कभी।

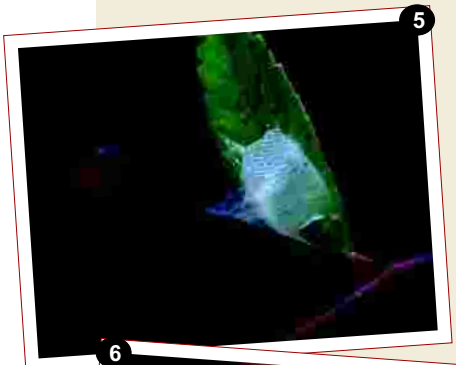
5

6

7

8

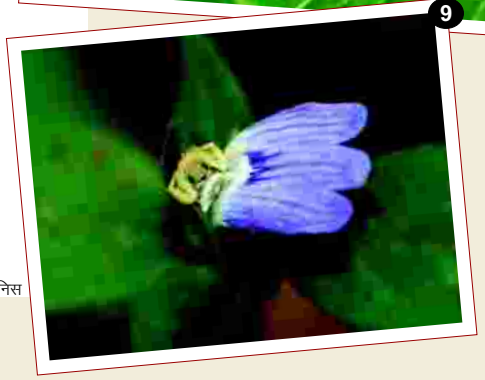
9

फोटोः आमोद कारखानिस